मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2016 marumegh
ISSN:2456-2904

पशुओ के अच्छे उत्पादन के लिए पौष्टिक आहार में यूरिया और शीरायुक्त खनिज की महत्ता

कूँ. कैलाश
स्नातकोत्तर,पशुपालन उत्पादन प्रबंधन, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविधालय जोबनेर–303329
ई.मेल– solankikishu22@gmail.com

यूरिया शीरायुक्त पशु आहार पशुओ के लिए पूरक पोषण का महत्वपूर्ण स्रोत है जिससे पशुओ की उत्पादन क्षमता में सुधार होता ह्रैं। यह स्थानीय सामग्री जैसे – गुड़, यूरिया, केल्साइट और गेहू के भूसे के साथ मिलाकर बनाया जा सकता हैद्य यह पशुओ के लिए एक सस्ता व पोषण आहार है इससे पशुओ की गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

भारत में पशुओ की संख्या बहुत अधिक है। परन्तु प्रति पशु दुग्ध उत्पादन बहुत कम है, इसका मुख्य कारण आनुवंशिकता क्षमता की कमी तथा पौष्टिक व संतुलित आहार की उचित आपूर्ति न होना है।

फसल अवशेष ही हमारे पशुओ का मुख्य आहार है। फसल अवशेष में नाइट्रोजन तथा खनिज की मात्रा बहुत कम होती है जबकि इनमे कार्बोहाइड्रेटस ही पर्याप्त मात्रा में होते है परन्तु लिग्निन अधिक होने के कारण पशु इनका पूरी तरह उपयोग नहीं कर पाते है

जुगाली करने वाले पशुओ की मुख्य विशेषता है की ये अपनी प्रोटीन तथा ऊर्जा की आवश्यकता केवल नाइट्रोजन तथा रेशेदार आहार से पूरा कर लेते है। इसके लिए प्रथम आमाशय में असंख्य जीवाणु होते है जो की नाइट्रोजन तथा रेशेदार कार्बोहाइड्रेट को वाष्पशील वासा व अम्ल में परिवर्तित कर पशुओ में प्रोटीन तथा ऊर्जा प्रदान कराते हैद्य लेकिन इसके लिए आवश्यक है की जीवाणुओं की नाइट्रोजन , ऊर्जा तथा खनिज की आवश्यकता को पूरा किया जाये। फसल अवशेष खिलाने से पशु में पोषण या उत्पादन की बात तो दूर इसके सेवन से पाए जाने वाले जीवाणुओं की पूर्ति भी नहीं हो पाती है।

यूरिया, शीरा तथा खनिज , सूखे चारे में मिलाकर खिलाने से पशुओ की जीवन निर्वाहन की आवश्यकता पूरी हो जाती है। इसके लिए पशुपालको को विशेष परीक्षणों की आवश्यकता होती है क्योंकि अगर तीनो तत्व ठीक प्रकार तथा उचित अनुपात में नहीं मिलाये गए तो यूरिया की विषाक्ता से पशु मर भी सकता है। इसलिए कृषको व पशुपालको की सुविधा के लिए यूरिया ,शीरायुक्त खनिज इस प्रकार से तैयार किया जाता है ,कि पशुओ के लिए हर तरह से सुरक्षित हो। पशु अपनी आवश्यकता के अनुसार पिंड को चाट सकता है और फसल अवशेष में जो तत्व कम होते है, उनकी आपूर्ति खनिज पिंड से हो जाती है।

अगर बिनौले अथवा मूंगफली की खली उपलब्ध नहीं हो तो दूसरी खली का उपयोग कर सकते है। यह पिंड बाजार में भी उपलब्ध होता है परन्तु महंगा पड़ता है तथा अवयवों की प्रतिशत मात्रा की विश्वसनीय नहीं होता है। इसलिए पशुपालक इसे घर पर तैयार करे तो ये काफी सस्ता व विश्वसनीय पड़ता है।

खनिजयुक्त पौष्टिक आहार बनाने की विधि :–

1. **खनिजयुक्त पौष्टिक आहार बनाने की गर्म विधि**

सबसे पहले शीरे को गर्म करके उसमे यूरिया केल्साइट पाउडर और सोडियम बैण्टोनाइट डालकर अच्छी तरह मिला दे। मिश्रण को धीरे –धीरे हिलाते हुए उसमे खनिज मिश्रण , बिनौले अथवा मूंगफली की खली अदि में मिलाये।

जब मिश्रण का तापमान 120^{o} सेण्डीग्रेट हो जाये तो इसको 10 मिनट तक अच्छी तरह मिलाये और जब सभी पदार्थ अच्छी तरह मिल जाये तो (80–90^{o}C) कर ले। मिश्रण को सांचो में डालकर पिंड बना ले।

2. **खनिजयुक्त पौष्टिक आहार बनाने की ठंडी विधि** – इस विधि में यूरिया, कैल्शियम ऑक्साइड (चुना) का प्रयोग किया जाता है। चुने के मिश्रण को मिलते समय इतनी गर्मी पैदा हो जाती है कि सरे मिश्रण को

अर्धतरल अवस्था में बदल देती है। तथा मिश्रण को सांचो में डालकर आसानी से पिंड बनाये जा सकते है।

यूरिया व शीरायुक्त खनिज पिंड खिलाने के लाभ –

1. पशु को पाचनशील कार्बनिक पदार्थ अधिक मिलता है
2. पशु द्वारा सूखे चारे तथा फसल अवशेष को खाने की मात्रा बढ़ जाती है क्योंकि इसमें प्रोटीन ,ऊर्जा तथा खनिज मौजूद होते है। जिससे अमाशय में उपस्थित जीवाणुओं की प्रक्रिया तथा उनकी संख्या में काफी वृद्धि हो जाती है।
3. सूखे चारे की पाचनशीलता तथा आगे बढ़ने की क्षमता दर बढ़ जाती है , पशु अधिक आहार लेता है जो कि पशु के लिए लाभदायक है।
4. जीवाणु अधिक प्रोटीन का निर्माण करते है जिससे व्यस्क पशु की प्रोटीन की आवश्यकता पूरी हो जाती है।
5. यूरिया, शीरा तथा खनिज पिंड, सूखे चारे के साथ खिलाने से मीथेन गैस कम बनती है जो कि वातावरण को प्रदूषित होने से बचता है